महर्षि पतंजलि कृत

पातंजल योगसूत्र

योगदर्शन

नन्दलाल दशोरा

॥ ॐ श्री गोविन्दाय नमः ॥

महर्षि पतंजलि कृत

पातंजल योग सूत्र

योग दर्शन

(मूल सूत्र, पदच्छेद, अनुवाद एवं व्याख्या)

अनुवादक एवं व्याख्याकार :
श्री नन्दलाल दशोरा

GRANTHBHARATI DISTRIBUTORS
Pustak Path, Upper Bazar, Ranchi-1
Ph. : 0651-2225467, Mob. : 9431115029

University Department of Yoga RU
No/PGDY/....493....
Library

मूल्य : ₹ 350.00

रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार

विषय-सूची

विषय	*पृष्ठ संख्या*
१. समाधि पाद	
१. योग शास्त्र का आरम्भ, योग के लक्षण	११
२. चित्त की वृत्तियों के भेद और उनके लक्षण	१५
३. चित्त की वृत्तियों का निरोध	२२
४. समाधि वर्णन	३०
५. ईश्वर प्रणिधान का महत्त्व	३८
६. चित्त के विक्षेप और उनको दूर करने के उपाय	४८
७. मन को स्थिर करने के उपाय	५०
८. समाधि के अन्य भेद एवं उनका फल	६०
२. साधन पाद	
१. क्रिया योग का स्वरूप और फल	७०
२. अविद्या आदि पाँच क्लेश	७३
३. क्लेशों के नाश का उपाय	८१
४. दृश्य और दृष्टा का स्वरूप	८२
५. प्रकृति और पुरुष का संयोग	८९
६. योग के आठ अंगों का वर्णन	१०२
३. विभूति पाद	
१. धारणा, ध्यान, समाधि का वर्णन	१२८

२. संयम का निरूपण १३२
३. चित्त के परिणामों का विषय १३७
४. प्रकृति जनित पदार्थों के परिणाम १४०
५. भिन्न विषयों में संयम करने का परिणाम १४६
६. विवेकज्ञान और कैवल्य १८९

४. कैवल्य पाद

१. सिद्धि प्राप्ति के हेतु तथा जात्यान्तर परिणाम १९८
२. संस्कार शून्यता २१०
३. वासनाएँ प्रकट होना व उनका स्वरूप २१२
४. गुणों का वर्णन २१७
५. चित्त का वर्णन २२१
६. धर्ममेघ समाधि और कैवल्यावस्था २२६

महर्षि पतंजलि कृत

पातंजल योगसूत्र : योगदर्शन

कोई भी सच्चा सम्बन्ध सजातीय तत्त्व से ही हो सकता है, विजातीय से नहीं। ईश्वर का सजातीय तत्त्व आत्मा ही है। अत: उसी से उसका प्रत्यक्ष अनुभव हो सकता है, अन्य जड़ तत्त्वों से नहीं।

इस शास्त्र में प्रकृति के चौबीस भेद एवं आत्मा और ईश्वर- इस प्रकार कुल छब्बीस तत्त्व माने गये हैं; उनमें प्रकृति तो जड़ और परिणामशील है अर्थात् निरन्तर परिवर्तन होना उसका धर्म है तथा मुक्तपुरुष और ईश्वर-ये दोनों नित्य, चेतन,स्वप्रकाश, असंग, देशकालातीत, सर्वथा निर्विकार और अपरिणामी हैं। प्रकृति में बँधा हुआ पुरुष अल्पज्ञ, सुख-दु:ख का भोक्ता, अच्छी-बुरी योनियों में जन्म लेने वाला और देशकालातीत होते हुए भी एकदेशीय सा माना गया है। इस ग्रन्थ में पुरुषविशेष को ईश्वर का प्रतिपादन करके उसकी शरणागति को आत्मसाक्षात्कार का कारण बताया है। ग्रन्थ में बहुत ही थोड़े शब्दों में आत्मकल्याण के बहुत ही उपयोगी और प्रत्यक्ष उपाय बताये गये हैं। ग्रन्थ का रहस्य समझने के लिये इसे आद्योपान्त पढ़कर उस पर विचार करें।

प्रत्येक साधक को इस ग्रन्थ में बताये हुए साधनों का श्रद्धापूर्वक सेवन करना चाहिये।

रणधीर प्रकाशन हरिद्वार